समृद्ध भारत

द्वारा प्रकाशित

होली विशेषांक

मासिक समाचार–पत्र

संस्करण–दशम् माह–मार्च

Edition -X Month- MARCH

यह कैसा लोकतंत्र ?

विश्व का सबसे बडा लोकतंत्र हमारा देश भारतवर्ष जनसंख्या में भी विश्व में दूसरे स्थान पर है। भारतीय लोकतंत्र की प्रक्रिया जनता द्वारा जनता के लिए जनप्रतिनिधि चुनने की परंपरा पर आधारित है । हमारे देश में विभिन्न प्रकार के चुनाव होते हैं। ग्राम पंचायत से लेकर लोकसभा तक, सत्ता की लालसा लगभग सभी चुनावों का आधार होता है। आज के दौर में राजनीतिक ऐसा रूप ले चुकी है जिसे कोई नाम देना संभव नहीं दिखता इसका निर्णय आप लोग स्वयं करें कि यह क्या है? क्षेत्रफल के आधार पर भी हमारा देश उपमहाद्वीप के रूप में जाना जाता है, कभी एक क्षेत्र में तो कभी दूसरे क्षेत्र में वर्ष भर चुनावों का दौर चलता ही रहता है। कभी ग्राम पंचायत चुनाव तो कभी नगरपालिका ,कभी विधानसभा तो कभी लोकसभा यह सिलसिला वर्ष भर चलता ही रहता है। इस समय भी देश के 5 राज्यों में विधानसभा चुनाव की प्रक्रिया प्रारंभ है ,आरोप–प्रत्यारोप का दौर एक दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश और खुद को दूसरे से बेहतर साबित करने की होडद्य। साम दाम दंड भेद आदि सभी पैत्रो का इस्तेमाल किया जाता है लेकिन हमारा आशय या उद्देश्य मात्र इस तरफ नहीं है,बल्कि हम यह कहना चाहते हैं कि विश्व सहित भारत में भी कोरोनावायरस ना कोहराम मचाने लगा है कोरोना की गाइड लाइन के अनुसार महासकर सोशल डिस्टेंसिंग सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। उधर चुनावों में भीड जुटाने की होडद्य, रैलियों का दौर लगातार चल रहा है ,कैसे होगी सोशल डिस्टेंसिंग? लगभग सभी पार्टियों के प्रवक्ता कभी किसी चैनल पर तो कभी किसी चैनल पर वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के द्वारा एक दूसरे के ऊपर छींटाकशी करते हुए ही नजर आते हैं। इन सब प्रक्रिया को देखकर क्या यह नहीं माना जा सकता कि हमारे राजनेताओं को देश के जनमानस की कोई परवाह नहीं बल्कि सत्ता की प्राप्ति ही एकमात्र लक्ष्य है? हम सब जानते हैं कि भीड कहां से जुटाई जाती है लगभग सभी पार्टियों के क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं एक बस या दो बस गांव से अर्थात अपने– अपने क्षेत्रों से पैसे और शराब का प्रलोभन देकर लोगों को इकट्ठा करके लाने की जिम्मेदारी दी जाती है। वह लोग शायद यह भी नहीं जानते कि उन्हें ले जाने वाले लोग खुद तो भरपूर सुरक्षा के इंतजामों में रहेंगे और वह लोग कभी चिलचिलाती धूप में तो कभी कम कपाती ठंड में हाथ उठाकर नारा लगाते ही रह जाएंगे। वही लोग कभी भाजपा की रैलियों में तो कभी कांग्रेस की रैली में लगभग सभी पार्टियों की रैली व सभाओं में विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के कार्यकर्ताओं द्वारा एकत्रित करके ले जाए जाते हैं। इतना ही नहीं राजनीतिक प्रतिद्वंदिता आज उस जगह पहुंच चुकी है कि एक दूसरे के कार्यकर्ताओं की हत्या करवा देना आम बात हो गई है। यह लोग भीड इकट्ठी करके ले जाते हैं और दूसरी पार्टी के लोग भी अपने लोगों को इकट्ठा करके लाते हैं और आम जनता को हिंसा की आग में झोंक दिया जाता है पश्चिम बंगाल में तो यह कार्यक्रम लगभग प्रतिदिन देखा जाता है और जब कोरोना जैसी महामारी अपने वीभत्स रूप को धारण कर लेती है तो तमाम तरह की पाबंदियां लागू कर दी जाती है ।जैसे लॉकडाउन, नाइट कर्फ्यू तो कभी धारा 140 जनता क्या करें? भारत एक कृषि प्रधान देश है और नया कृषि कानून जिसके विरोध में किसान आंदोलन पंजाब, हरियाणा से प्रारंभ होकर अशिक्षित भोले भाले निरंतर श्रम करने वाले किसानों को गुमराह करके तथाकथित किसान नेताओं द्वारा भीड के रूप में एकत्रित किया जाता है, कभी विदेशी साजिशों में फंसा कर तो कभी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए विभिन्न देश विरोधी कार्यो को अंजाम दिया जाता है। एक किसान नेता ने टिकैत जो देश में विभिन्न स्थानों पर महापंचायत का आयोजन करवा रहे हैं और प्रियंका वाड्रा इनकी खास साथी है। लोगों के भाषणों से ऐसा प्रतीत होता है जल्दी ही कांग्रेस पार्टी अपने नेताओं को हल जोतने के कार्यक्रम में लगा देगी। चिलचिलाती धूप में खेतों में श्रम करने वाले देश के अन्नदाता किसानों के साथ ये कैसा अन्याय है? शिक्षा के अभाव में जानकारी की कमी होने के कारण यह लोग सदैव राजनीतिक नेताओं के द्वारा ठगे जाते हैं, राकेश टिकैत जैसे नेता कहे जाने वाले धूर्त और पाखंडी लोग अपने हितों को साधते हैं। अब टिकट महोदय भाजपा के विरुद्ध प्रचार करने के लिए पश्चिम बंगाल पहुंच चुके हैं वहां भी वह पंचायत करेंगे जिस राज्य में दो दशकों से तृणमूल कांग्रेस का शासन रहा है और केंद्र के सभी लाभकारी योजनाओं को लागू नहीं किया गया है वहां कौन सी पंचायत करेंगे टिकैत? के कार्यक्रम को देखकर ऐसा लगता है कि जल्दी ही एक नई राजनीतिक पार्टी बनाएंगे और चुनाव के खोरी संग्राम में कूद पडध्गे क्योंकि पैसे की तो इनके पास कोई कमी है नहीं, विदेशी खालिस्तानियों के द्वारा फंड तो इनको मिलता ही होगा। क्योंकि सिंधु बॉर्डर पर एकत्रित किसान जो टेंट और तंबू में बैठे थे सिंधु बॉर्डर पर ही अब राकेश टिकैत के लिए मकान बना रहे हैं जिसकी नींव डाल दी गई है। बिना मजदूरी के भोले–भाले किसान उनके मकान बनाने में श्रमिकों के रूप में काम कर रहे हैं। जहां किसानों का उल्लेख करना भी इसलिए आवश्यक था कि राजनीति के इस रूप को भी आपके समक्ष स्पष्ट किया जा सके। कहना लोकतंत्र की मर्यादाओं के विरुद्ध होगा कि यदि यही रूप है राजनीति का अब बंद हो जाना चाहिए यह सब कुछ कोई फायदा नहीं है से चुनावों का जनता द्वारा जनता की हत्या और उनके समूह को नष्ट करने के लिए आयोजित किए जाते हैं और कोई नया तरीका खोजना होगा विश्व के सबसे बडे लोकतंत्र को संचालित करने हेतु। यहां हम यह भी स्पष्ट करना चाहते हैं कि हम लोग लोकतंत्र के विरुद्ध नहीं है लेकिन इस हिंसात्मक सत्ता लोलुप राजनीति का पूर्ण रूप से पुरजोर विरोध करते हैं और देश के समस्त जनमानस से भी इसका विरोध करने का आह्वान करते हैं ।

संपादक
तरुण सिंह

कोरोना बाबा की जय

चलो इक बार फिर से,
अजनबी बन जाएं हम सब
मैं आपसे डरता रहूँ
आप मुझे देख घबराते रहो
बदन की दूरी के साथ
नजरो से ही समझाते रहो
ए कोरोना नही
उसकी औलाद है
अब क्या पता उसके जैसा है
या उसका गुरुघण्टाल है
लड़खड़ाये मेरी बातों से
न जाहिर हो आपकी भी
कश्म–कश का राज
दिलोदिमाग से चलिए
इक बार फिर से,
अजनबी बन जाएं
उसी अंदाज से
जय हो कोरोना बाबा की

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक
नाद अनुसंधान ट्रस्ट(पंजीकृत)
प्रबंधक– संजय कुमार बनर्जी
तकनीकि सहयोग– सभ्यता सिंह
सम्पादकीय विभाग
संपादक–तरुण सिंह
सह–संपादक–अभय प्रताप सिंह, संस्कृति सिंह
विशेष संवाददाता– तनुज कुमार

आपको और आपके परिवार को
होली के पावन अवसर पर
हार्दिक शुभकामनाये!

तुम अपने रँग में रँग लो तो होली है।

देखी मैंने बहुत दिनों तक
दुनिया की रंगीनी,
किंतु रही कोरी की कोरी
मेरी चादर झीनी,
तन के तार छूए बहुतों ने
मन का तार न भीगा,
तुम अपने रँग में रँग लो तो होली है।
अंबर ने ओढी है तन पर
चादर नीली–नीली,
हरित धरित्री के आँगन में
सरसों पीली–पीली,
सिंदूरी मंजरियों से है
अंबा शीश सजाए,
रोलीमय संध्या ऊषा की चोली है।
तुम अपने रँग में रँग लो तो होली है।

हरिवंश राय बच्चन

नयनों के डोरे लाल–गुलाल भरे

नयनों के डोरे लाल–गुलाल भरे, खेली होली !
जागी रात सेज प्रिय पति सँग रति सनेह–रँग घोली,
दीपित दीप, कंज छवि मंजु–मंजु हँस खोली–
मली मुख–चुम्बन–रोली ।

प्रिय–कर–कठिन–उरोज–परस कस कसक मसक गई चोली,
एक–वसन रह गई मन्द हँस अधर–दशन अनबोली–
कली–सी काँटे की तोली ।

मधु–ऋतु–रात,मधुर अधरों की पी मधु सुध–बुध खोली,
खुले अलक, मुँद गए पलक–दल, श्रम–सुख की हद हो ली–
बनी रति की छवि भोली ।

बीती रात सुखद बातों में प्रात पवन प्रिय डोली,
उठी सँभाल बाल, मुख–लट,पट, दीप बुझा, हँस बोली
रही यह एक ठिठोली ।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

Watch Out for These COVID-19 Vaccination Scams

COVID-19 scammers are using different methods to get into your wallet and personal information. You can protect yourself from COVID-19 vaccine appointment scams by knowing the facts, being aware of these scams, and exercising caution when sharing personal information. Only get information about the vaccine from your state's health department, local public health authorities, or doctor's office. More than a year since the World Health Organization (WHO) declared COVID-19 a pandemic, the news that your COVID-19 vaccine is around the corner has made many people impatient. Perhaps you've heard about a nearby supersite, pharmacy, or community health center that's ready to begin administering the vaccine to eligible people.But excitement mixed with uncertainty can leave you vulnerable to COVID-19 vaccination appointment schemes. The Department of Health and Human Services (HHS) Office of Inspector General says COVID-19 scammers are using telemarketing calls, text messages, social media platforms, and door-to-door visits to get into your wallet and personal information.Information collected can be used to fraudulently bill federal healthcare programs and commit medical identity theft, says the HHS. Healthline spoke with Amy , director of victim support for the AARP Fraud Watch Network, on how to avoid COVID-19 vaccine appointment scams.

Registering with confidence

If you're unsure how to securely and safely book a COVID-19 vaccination appointment, Nofziger said the best source of information on vaccines is a physician or local health department. "If you don't have a healthcare provider, you should consult your local public health authorities, " she said."The COVID-19 vaccine registration processes vary by state, and sometimes even by county. To get the latest on how to get the vaccine in your state, visit AARP.org/coronavirus," she told Healthline.You can also use Vaccine Finder, an online tool from the Centers for Disease Control and Prevention (CDC), to search vaccine providers near you.

Protecting yourself

You can protect yourself from COVID-19 vaccine appointment scams by knowing the facts, being aware that these scams are happening, and using caution when discussing the vaccine and sharing personal information. According to the CDC Trusted Source, COVID-19 vaccine providers cannot:charge you for the vaccine charge you directly for any administration fees, copays, or coinsurance deny vaccination to anyone who does not have health insurance coverage, is underinsured, or is out of networkcharge an office visit or other fee to the recipient if the only service provided is a COVID-19 vaccination require additional services in order for a person to receive a COVID-19 vaccine (however, additional healthcare services can be provided at the same time and billed as appropriate)The HHS confirms this: "You will not be asked for money to enhance your ranking for vaccine eligibility. Government and state officials will not call you to obtain personal information in order to receive the vaccine." This means that anyone asking you for money in exchange for an appointment, a spot on a waitlist, or a COVID-19 vaccine isn't a legitimate provider and should not be trusted.Nofziger said the best ways to protect yourself are to:Only get information about the vaccine from your state's health department, local public health authorities, or doctor's office.Do not share your personal or health information with anyone other than known, trusted medical professionals.If someone reaches out to you to set up an appointment, verify who that person is before giving any personal information.

Catching a fraudster

So, what should you do if you suspect someone is trying to scam you?"Keep a record of what happened, including any online interactions or information exchanged," Nofziger said."You should always report if you have been a victim of a scam or if you spot activity you suspect may be a scam," she told Healthline.You can report a suspected scam to the U.S. Department of Justice's National Hotline at 866-720-5721 or via the NCDF Web Complaint Form."While you may not be able to recover money lost, reporting it could help prevent it from happening to someone else."

पुरस्कारों के बन्दरबांट से दुःखी न हों

डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल रजक

हाल ही में उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ ने रत्न सम्मान और अकादमी पुरस्कारों की घोषणा की थी। मथुरा के भी कुछ संस्कृति कर्मियों ने अप्लाई किया था, पर मथुरा तो बहुत दूर, पूरे पश्चिमी उत्तर प्रदश के साथ क्या हुआ,यह किसी से छिपा नहीं है।
पिछले साल की भी बता दूँ।मथुरा के कई लोगों को अकादमी पुरस्कार प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। जिनमें एक कलाकार ऐसा भी है कि न जाने कहाँ–कहाँ से उल्टी–सीधी डिग्री ले आया है। अकादमी सम्मान मिलते ही अब वह बहुत बड़ा विद्वान भी बन गया है। इस घोर अन्याय से मथुरा के कुछ अच्छे कलाकारों के पेट में मरोड़ मारनी स्वाभाविक ही है। इस वर्ष के आवेदनकर्ताओं में से एकाध ने मुझसे भी अपनी प्रशंसा में कुछ लिखवा लिया था। लिस्ट डिक्लेयर होने के बाद से ही वे सब बेचारे सदमे में हैं। उन सभी से मेरी प्रार्थना है कै इस चूतिया चक्कर को छोड़कर अपनी साधना में लगे रहें। सूर, तुलसी, मीरा, कबीर जैसे अनगिनत धरती रत्नों को कोई अकादमी, यश भारती, पद्म या भारत–रत्न सम्मान जैसे सम्मान नहीं मिले थे और उनको पढ़–पढ़कें न जाने कितने ऐसे सम्मान पा गए। मेरी सलाह तो यही है किदृ

पुरस्कार अरु नाम की,
तनिक न रखिए चाह।
इनको पा बौरात नर,
हो जाता गुमराह।।
हो जाता गुमराह
कि फूला नहीं समाता।
धरा न रखता पाँव
कि पग–पग पर इतराता।।
कहें रजक कविराय,
सोर्स का है ये जमाना।
या फिर रखिए फोर्स,
पाइए नाम औ नामा।।

आगे आपकी मरजी.........

जीवन व्यर्थ गँवाया

कौन है अपना, कौन पराया,
कोई कभी समझ ना पाया।
मात–पिता, भ्राता–भगिनी, स्त्री,
सुत–सुता मोह भरमाया।
जर्जर कीन्हीं काया।।
जीवन व्यर्थ गँवाया रे भैया
जीवन व्यर्थ गँवाया।।

मीत नहीं कोई इस जग में,
स्वार्थ भरे सबकी रग–रग में।
झूठे नाते, झूठे बन्धन,
ये सब हैं माया के कंगन।
क्यों करके भरमाया।।
जीवन व्यर्थ गँवाया रे भैया
जीवन व्यर्थ गँवाया।।

झूठे हैं सब लोग–लुगाई,
भ्रमित भई मति जान न पाई।
किस–किसको कब तक पूजेगा,
ऐसे ही कब तक गूँजेगा।
कर न समय अब जाया।।
जीवन व्यर्थ गँवाया रे भैया
जीवन व्यर्थ गँवाया।।

जिसने धरा–धाम पर भेजा,
वो ही सच्चा, बाकी बेजा।
तोड़ श्रजकश माया के बन्धन,
उसको कर तन–मन–धन अर्पण।
समझ ये है अब आया।।
जीवन व्यर्थ गँवाया रे भैया
जीवन व्यर्थ गँवाया।।

——————

–डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल रजक, मथुरा.

जब मैंने भी माँगी रिश्वत

संस्मरण

— डॉ.राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल, मथुरा.

अन्य संस्थानों की भाँति प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद की परीक्षाओं के लिये भी प्रायः मुझे बाहर तो जाना ही होता है लेकिन मई के सेशन में तो लगभग हर वर्ष इलाहाबाद के केंद्रों अथवा प्रयाग संगीत समिति में ही परीक्षा लेने के अवसर मुझे मिलते रहते हैं। लगभग सप्ताहभर देशभर से आये हम कुछ परीक्षकों को पूरे दिन प्रैक्टिकल एग्जाम लेने होते हैं और रात्रि में हम सभी लिखित परीक्षा की कापियाँ चेक करते हैं। वाकया लगभग सन 2011–12 के आस–पास का होगा। मुझको इलाहाबाद में ही एक बहुत बडे केंद्र पर गायन, वादन और नृत्य की परीक्षा लेनी थी। उस केंद्र पर सुबह से शाम तक, बल्कि देर रात तक मैंने दो दिन परीक्षा ही ली। वह इतना बडे केंद्र था कि प्रभाकर के ही केवल 20–22 छात्र–छात्राएं थे। अधिकांश छात्र छात्राएं इलाहाबाद विश्वविद्यालय के गायन के थे, जिनके साथ उनके गुरुजन भी पधारे थे। लगभग सभी छात्र छात्राएं एक–से–एक बेहतरीन थे किंतु तबला विषय से प्रभाकर कर रही एक ऐसी भी छात्रा थी जिसको कुछ भी मालूम नहीं था। वह शायद थर्ड ईयर या फोर्थ ईयर का इम्तिहान देने के लायक भी नहीं थी किंतु उसकी हालत देखकर मुझे लग रहा था कि वह बच्ची किसी बहुत ही गरीब परिवार से है। उस बच्ची से जब मैंने यह कहा कि बेटा ! मैं आपको आखिर किस तरीके से पास करूंगा। मैं बहुत चाहता हूं, मन से चाहता हूं कि आपको फेल न किया जाए किंतु मुझे कम–से–कम उतना तो बजाकर के बताओ जिसके आधार पर मैं आपको पास कर सकूँ और यह परीक्षा भी बदनाम ना हो। बच्ची की हालत बेहद खस्ता देख मैंने उसको पास करने के उद्देश्य से बहुत–सी बातें बतलाई और फिर कहा कि आप जैसे–जैसे मैं कर रहा हूं वैसे–वैसे ही तबले पर करके दिखाएँ। मैंने उसको जैसे–जैसे थोडे–थोडे कुछ बतलाया वह उसकी कॉपी करने लगी। जब मुझे लगा कि सीखने की क्षमता तो इस कन्या में है किंतु यह सीख नहीं पाई है। मैं उसको इतना तो कम से कम कुछ कर आया जिससे कि वह तबले के बारे में कुछ बता सके। मैंने उसको कहा कि मैं आपको बहुत खराब अंकों से भी पास नहीं करना चाहता। मैं चाहता हूं कि कुछ तो ऐसे नंबर मिल जाए जिससे कि आप अधिक नहीं तो किसी छोटे–मोटे स्कूल में ही जॉब पा सकें और यदि यह भी संभव न हो सके तो कुछ वर्ष मेहनत करके तबले का प्रशिक्षण ही छोटे बच्चों को दे सकें। किंतु यह सब होगा तभी जब आप मुझे इसके बदले कुछ रिश्वत देंगी। वह लडकी अब मुझे करुणा भरी नजरों से देखने लगी और कहने लगी–गुरु जी ! मेरे पास आपको देने के लिए कुछ भी तो नहीं है। मैंने कहा, नहीं मैं तुमसे केवल वही चीज मांगूंगा जो तुम मुझे दे सकती हो। वह विस्मय भरी नजरों से मुझे देखने लगी तो मैंने उससे कहा कि आपके घर में प्लास्टिक के मग, बाल्टी, टब सरीखे बेकार बर्तन भी तो होंगे। आपको केवल यह करना है कि इस भीषण गर्मी में छोटे बर्तनों में पानी भर के अपने घर की छत पर रखना है और नीचे बडे बर्तनों को रोजाना अपने घर के दरवाजे के आसपास रखना है ताकि उन पशु,–पक्षियों को, जो प्यास से तडप रहे हों, उन्हेँ जल मिल जाए और उनकी प्यास बुझ सके। मेरा यह सब कहने के पीछे मकसद यह था कि मैं उन दिनों अपने घुटनों और जोडों के दर्द के कारण बेहद परेशान चल रहा था। वैसे भी मैं युवावस्था से ही आर्थराइटिस का मरीज हूं। चूँकि मेरे लिए रोजाना छत पर ऊपर जाकर और नीचे सीढ़ी उतरकर जाना बहुत कष्टकारक लग रहा था, अतः मैंने मन में यह सोचा कि इस समय जो भीषण गर्मी पड रही है, यदि यह बालिका ऐसा कुछ नियम आजीवन बना लेगी, चाहे भयवश और स्वार्थवश ही सही, तो जहां इस बालिका के द्वारा एक अच्छा कार्य संपन्न हो सकता है वहीं मुझको भी इस बात की संतुष्टि होगी कि मैंने किसी युवती को किसी अच्छे कार्य के लिए प्रेरित किया। निश्चय ही मुझे भी उसका कुछ तो पुण्य मिलेगा ही। मैंने उसको कहा भी यही कि बेटा ! जब आप रोजाना यह पानी भरकर रखें तो ईश्वर से मेरे लिए एक प्रार्थना यह जरूर कर लें के हे ईश्वर ! मैं यह जो सत्कार्य कर रही हूं, इसका आधा श्रेय या आधा पुण्य मेरे उन एग्जामिनर महोदय को अवश्य मिल जाए, जिनके मन में यह सत्कार्य करने की लालसा तो बहुत है किंतु वह अपनी शारीरिक परेशानियों के कारण विवश होकर इस कार्य को नहीं कर पा रहे हैं। मेरे द्वारा ऐसा कहते के साथ ही उस बालिका के चेहरे पर हल्की–सी मुस्कान दौड़ गई और पास हो जाने की पक्की उम्मीद के साथ वह परीक्षा भवन से रुखसत हो गई।

होली और संगीत

—डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल, मथुरा

होली का तो कहना ही क्या ? विश्व के कोने–कोने का व्यक्ति यहाँ की होली की एक झलक मात्र पाने के लिए लालायित रहता है। रंग–गुलाल के साथ सामूहिक रूप से खेलने का यह पर्व संसारभर में मनाए जाने वाले सभी त्यौहारों में सम्भवतया सर्वाधिक अनुपम, दिव्य एवं अनोखा है। ब्रज –क्षेत्र में यह एक दिन या एक सप्ताह तक ही नहीं बल्कि बसन्त पञ्चमी से लेकर पूरे चालीस दिनों तक सम्पूर्ण वातावरण में रंग भरी उमंग पैदा कर, प्राणी मात्र के हृदय को झंकृत कर, फाल्गुनी मस्ती में मदमाता कर देता है। ब्रज चौरासी कोस में तो पूरे सत्तर दिनों तक यानि चौत्र मास की पूर्णिमा तक सङ्गीत की समाजें बैठती हैं रसिया–दंगल और फूलडोल जैसे मेले होते हैं। मथुरा–वृन्दावन, नन्दगाँव–बरसाना, जाव–बठैन, फालेन–जटवारी आदि की होली एवं दाऊजी का हुरंगा तो जगत– प्रसिद्ध हो चुके हैं।सङ्गीत में होली और धमार विशिष्ट गायकियों के नाम हैं। धमार नामक ताल में गाई जाने वाली गायकी धमार कहलाती है। संकीर्ण जाति की यह ताल चौदह मात्राओं की होती है तथा इसमें क्रमशः 5–2–3–4 मात्राओं के विभाग होते हैं। धमार गायकी का गायन अधिकांशतया ध्रुवपद गायक ही करते हैं, क्योंकि यह गायकी ध्रुवपद की भाँति ही होती है। अन्तर केवल इतना ही रहता है कि इसमें ध्रुवपद की अपेक्षा गाम्भीर्य कम होता है। धमारों की भाषा भी ध्रुवपद की भाँति ब्रज, हिन्दी अथवा उर्दू होती है। इस गायकी में भी ध्रुवपद की ही भाँति पावन प्रेम का प्रतीक पर्व होली हमारे देश के सर्वप्रमुख एवं प्राचीनतम त्यौहारों में से एक है। यह पारस्परिक प्रेम और भाईचारे को बढ़ाने वाला त्यौहार है। इसमें छोटे–बड़े, राजा–रंक और अमीर–गरीब के सभी भेद मिट जाते हैं। समस्त वर्जनाओं के बन्धन शिथिल पड़ जाते हैं। पारस्परिक रागात्मकता का वातावरण बनाने वाला यह त्यौहार मानव–हृदय को इतना सरस बना देता है कि उसका अन्तर्मन हास–परिहास, मौज–मस्ती और मनोविनोद की हिलोरें लेने लगता है। हिरण्यकश्यपु के द्वारा अपने ही पुत्र नारायण–भक्त प्रह्लाद के उत्पीड़न की कथा अति प्राचीन काल से ही इस त्यौहार के साथ जुड़ी चली आ रही है। इसी प्रकार ढुंढा राक्षसी के आतंक की कथा भी इस त्यौहार के साथ सम्बद्ध है। यह पर्व जहाँ अधर्म पर धर्म एवं दानवत्त्व पर देवत्त्व की विजय का प्रतीक है, वहीं कृषि से भी इसका सम्बन्ध है। इन दिनों में फसल गहरा जाती हैं। धरा का धानी आँचल फलों से लद जाता है। होली पर ही नवान्न को भूनकर खाने का मुहूर्त किया जाता है। अपनी खुशी को प्रकट करने के लिए लोग गीत, वाद्य एवं नृत्य का सहारा लेते हैं। होली का नाम लेते ही राधा–कृष्ण एवं कृष्ण–गोपिकाओंकी फाल्गुन मास की लीलाएँ तो मानों साकार हो उठती हैं।यूँ तो दो दिनों तक यह पर्व सम्पूर्ण भारतवर्ष में हर्षोल्लासपूर्वक मनाया जाता है किन्तु ब्रज की लयकारियों का प्रदर्शन किया जाता है। यदा–कदा बोल–तानों का भी प्रयोग अनेक लयों के साथ कुछ गायक करते हैं। धमार ताल कठिन होने के कारण नव–प्रशिक्षुओं को इसे सीखने में कुछ कठिनाई का अनुभव होता है। धमार गायन–शैली में भी –स्थाई और अन्तरा– दो ही भाग होते हैं। ध्रुवपद की भाँति इस गायकी की संगति में भी पखावज का प्रयोग किया जाता है। आचार्य पण्डित विष्णु नारायण भातखण्डे जी ने क्रमिक पुस्तक मालिका (छः भाग) में अनेकानेक रागों में होली की धमारों की स्वरलिपियाँ दी हैं। राग दरबारी कान्हड़ा में निबद्ध निम्न धमार दृष्टव्य है–

मन्दिर डफ बाजन लागे री।आयौ फागुन मास।।

जहाँ तक होली गायन की अन्य विधाओं की बात है, खयाल–गायक जब होली सम्बन्धी रचनाओं को विभिन्न तालों में गाते हैं तो वह गीत होली कहलाता है। खयाल–गायक ऐसी रचनाओं को तीनताल, कहरवा या दीपचन्दी आदि तालों में गाते हैं। इनमें गायक आलाप, तान, पलटे, खटके, मुर्की आदि का प्रयोग ख्याल की तरह ही करते हैं। धमार और होली की विषय–वस्तु एक ही होने के बाद भी दोनों ही गायकियों में बहुत अन्तर होता है। धमार में जहाँ गाम्भीर्य होता है वहीं खयाल गायकों की होली में चांचल्य की प्रधानता रहती है। धमार जहाँ प्खावज जैसे गाम्भीर्य युक्त वाद्य पर गाई जाती है, वहीं खयाल की संगति हेतु तबला ही सर्वाधिक उपयुक्त वाद्य होता है। धमार और होली गायकियों के अतिरिक्त ठुमरी नामक गायन–शैली में भी होली की छटा खूब देखने को मिलती है। यथा–बरजोरी करो न मोसे होरी में। लोक–गीतों में भी होरी नामक लोक–गीत बेहद पसन्द किए जाते हैं। होरी नामक लोक–गीत का प्रिय ताल चाँचर या चर्चरी है। ब्रज में राग काफी की होरी बेहद लोकप्रिय हैं। ऐसी होरी पहले दीपचन्दी ताल विलम्बित लय में प्रारम्भ की जाती हैं और अन्त में द्रुत लय में लेने के लिए पूर्वाधारित ताल से हटकर अधिकांशतः कहरवा ताल में मोड़ दी जाती हैं, जो श्रोतागण को रस–विभूत कर देती हैं। यथा–

कैसौ ये देस निगोड़ा, जगत होरी ब्रज होरा।अथवा होरी हो ब्रजराज दुलारे, प्यारे।

वैष्णव मन्दिरों की होलीरू

वैष्णव मन्दिरों में होली का प्रारम्भ बसन्त पञ्चमी से ही हो जाता है। यहाँ इसी दिन ब्रज–बालाएँ गा उठती हैं–आई हम नन्द के द्वारे। खेलत फाग बसन्त पञ्चमी, सुख–समाज विचारे।।

– सूरदास

मन्दिरों में सन्तों द्वारा रचित विशिष्ट पदावलियों का गायन प्रारम्भ हो जाता है। अकबरी दरबार के प्रसिद्ध इतिहासकार अबुल फज्ल ने आईने अकबरी में कीर्तनियाँ नामक सङ्गीत–जीवी ब्राह्मणों की चर्चा की है और इनके प्रमुख वाद्य रबाब, पखावज और ताल या झाँझ बताए हैं। वर्तमान में रबाब जैसे ईरानी वाद्य का सीन फ्रांसीसी वाद्य हारमोनियम ने ले रखा है। मन्दिरों में होली के दिन तो प्रातः से सायंकाल तक होली के पद ही गाए जाते हैं। यहाँ तक कि शयन में भी श्कोऊ भलौ–बुरौ जिन मानों, आज रँग होरी है आदि भाव–पद गाए जाते हैं। वैष्णव–सम्प्रदाय के मन्दिरों में

अनुसंधान

(पृष्ठ–4 का शेष भाग)

आज भी होली की समाज–गायकी का आनन्द लिया जा सकता है। पुष्टिमार्गीय या वल्लभ–सम्प्रदाय के मन्दिरों में तो होली की धूम दर्शनीय होती है। इन मन्दिरों में कीर्तनियाँ ळवेली–सङ्गीत (जिसे वास्तव में कीर्तन–सङ्गीत या संकीर्तन –सङ्गीत अथवा वैष्णव सङ्गीत या मन्दिर–सङ्गीत कहा जाना चाहिए) के अन्तर्गत होरी की धमारें तो गाते ही हैं, ब्रज की सर्वाधिक प्रसिद्ध लोक–गायकी रसिया का गायन भी बड़े चाव से करते हैं। ब्रज का सर्वाधिक प्रसिद्ध रसिया है–आज बिरज में होरी रे रसिया।होरी रे रसिया, बरजोरी रे रसिया।।होली की रंगत में राधा–कृष्ण ही क्या, सभी देवगण रँग जाते हैं।भोलेनाथ शिव शंकर के सन्दर्भ में एक प्रसिद्ध होली–गीत के बोल हैं–मैं कैसे होरी खेलूँ री,या बावरिया के संग। अंग भभूत गले विष–माला, लटन विराजे गंग।। वास्तव में होली एक ऐसा त्यौहार है जिसमें देशकाल के समस्त बन्धन भी रसिकों द्वारा तोड़ दिए जाते हैं।। भावनात्मक एकता की तो एक –से–एक अनूठी मिसालें इस त्यौहार पर देखने को मिल जाती हैं। किसी लोक–कवि ने क्या अजब लिखा है–मची होरी रे मची होरी,राजा बलि के द्वार मची होरी।एक ओर खेलें कुमर कन्हैया प्यारे,दूजी लंग राधा गोरी।।मन्दिरों में गाए जाने वाले राग होली के दिनों में न अधिक गर्मी होती है और न अधिक सर्दी। मौसम शीतोष्ण रहता है, जो बड़ा ही सुहावना लगता है। अतः मन्दिर–सङ्गीत में –ठण्डे एवं गर्म– दोनों ही प्रकार के रागों का पर्याप्त प्रयोग होता है। भैरव, विभास, पंचम, खट, ललित, देवगन्धार, सुघराई, रामकली, बिलावल, आसावरी, तोड़ी, जैतश्री, धनाश्री, काफी, सारंग, नट, पूर्वी, मारू, सोरठ, गौरी, रायसा, कल्याण, ईमन, हमीर, कान्हड़ा, नायकी, केदारा, जैजैवन्ती तथा बिहागड़ा आदि रागों में होरी की धमारें सुनी जाती हैं। धमार गायकी में गायक और पखावजी की मीठी छेड़–छाड़ भी होती है, जो सहज ही श्रोताओं के मन हर लेती है।ऐसा भी नहीं कि होली की मस्ती में वियोग होता ही न हो। जब चहुँ टोर फाग की फुहारें पड़ रही हों किन्तु किसी प्रेयसी के पास उसका प्रियतम न हो तो उसके विरह की कल्पना भी सहज ही की जा सकती है। श्रीकृष्ण के विरह में फाग की चंद रचनाएँ ते इतनी मार्मिक हैं कि उनको सुनते ही किसी भी सहृदय का फूट पड़ना या भाव –विह्वल हो जाना स्वाभाविक ही है। मीरां बाई के एकाध विरह के पद तो इतने मार्मिक और कारुणिक हैं कि सुनने वाले के नेत्रों से अश्रु–धारा प्रवाहित हो जाए। यथा–

होली पिया बिनु लागे खारी।
सुनो री सखी मोरी प्यारी।।

वाद्यों का प्रयोग जिस प्रकार होली में सभी प्रकार की वर्जनाएँ समाप्त हो जाती हैं और सभी घुल–मिलकर इस त्यौहार को मनाते हैं, उसी भाँति होली में सभी प्रकार के चतुर्विध वाद्य–यन्त्रों के प्रयोग का उल्लेख मिलता है। अष्टछापी काव्य में श्री कृष्णदास जी विरचित होली के एक ही पद चल री सिंह पौर चाँचर मची जहँ खेलत ढोटा दोय में लगभग 30 वाद्यों का उल्लेख मिलता है, जो होली में सभी प्रकार के वाद्यों के प्रयोग को दर्शाता है। वैसे मध्यकाल में ब्रज में होली में जो वाद्य–यन्त्र प्रचलित थे, उनमें प्रमुख इस प्रकार थे– चमेली, हुडुक्का, उपंग, अपंग, चिकाड़ा, अलगोझा, ताल, मुरचंग, खुरचनी, चन्द्रपिरई, सूर्यपिरई, घड़ा, नक्कारा, पखावज, सारंगी, जलतरंग, स्वरमण्डल, रुद्र वीणा, किन्नरी, रबाब, अमृत कुण्डली, यन्त्र(जन्त्र), बाँसुरी, सिंगी, शंख, मादिलरा, रुंज, मुरज, डमरू, दिमदिमि, डिमडिमी, चंग, डफ, खंजरी, मंजीरा आदि।समय के प्रवाह में कुछ वाद्य–यन्त्र बिल्कुल ही विलुप्त हो गए किन्तु फिर भी जितने भी वाद्य–यन्त्र होली के रंग–बिरंगे त्यौहार में आज भी बजते ही हैं। अब तो पाश्चात्य विविध वाद्य व की–बोर्ड तथा ऑक्टोपैड जैसे इलेक्ट्रॉनिक वाद्य भी ऐसे घुलते–मिलते जा रहे हैं कि अब उनका नकारना भी बहुत मुश्किल है।मुगल शासन में होली इतिहास गवाह है कि होली का हल्ला और धमारों की धमक लोक –जीवन या मन्दिरों तक ही सीमित नहीं रही, बल्कि मुगलकालीन राज–दरबार एवं सङ्गीत–सभाओं में भी होली की रंगीनियाँ छाई रहीं। होली के दिन जलालुद्दीन बादशाह अकबर विशेष रूप से अपने दरबार में आयोजन रखते थे। हरम में जाकर होली खेलते थे। बेगम अपने बादशाह को गुलाल का टीका लगाकर रंग–गुलाल की वर्षा करती थी। जवाब में बादशाह अकबर भी बेगम को रंग–गुलाल से सराबोर कर देते थे। अकबर को होली का त्यौहार बहुत प्रिय था। तुजुकी जहाँगीर में उल्लेख है कि बादशाह जहाँगीर भी होली खेलने के बेहद शौकीन थे। शाहजहाँ के दरबार में भी होली की धमालें मचा करती थीं। और तो और औरंगजेब तक मंगलामुखियों के साथ धमारी खेलते थे। मुहम्मद शाह तो होली के रंग में ऐसे रंगे कि रंगीले के नाम से ही प्रसिद्ध हो गए। नवाब वाजिद अली शाह नौ दिनों तक होली का त्यौहार मनाते थे। शानो–शौकत के साथ शाही महल सजाया जाता था। केशर मिश्रित रंग तैयार किया जाता था। चाँदी की सुन्दर तश्तरियों में रंग–गुलाल एवं पिचकारियाँ सजाकर रखी जाती थीं और फिर प्रारम्भ होता था महल की शहजादियों के साथ आम बालाओं का होली खेलने का ऐसा दौर, जहाँ केवल और केवल होता था उन्मुक्त, रंगीन और स्वच्छन्द वातावरण। नृत्य –गान से महफिलें सज उठती थीं। सदारंग, अदारंग, मनरंग और नूररंग आदि अनेक कलाकारों ने होली के रम्य चित्र अपनी गेय रचनाओं के माध्यम से उकेरे हैं। अनेकानेक अज्ञातनाम रसिकों ने भी इस प्रकार की रचनाओं में श्रीवृद्धि की है। उस समय दरबारों में बीन अर्थात् वीणा और पखावज का प्रयोग होता था।फिल्मों में होली भारतीय सिनेमा भी होली के रंगों से अछूता नहीं रहा है। फिल्मों में भी एक–से–एक सुन्दर होलियाँ गाई गई हैं। फिल्म मदर इण्डिया का होली–गीत होली आई रे कन्हाई, रंग छलके, सुना दे जरा बाँसुरी तो आज भी लोगों को बेहद प्रिय है।

डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल
(संगीतज्ञ, लेखक, सम्पादक, कवि)
सङ्गीत–सदन
94, महाविद्या कॉलोनी–सस,
मथुरा–281 001 (उ.प्र.)
मो. 9897247880 (व्हाट्सएप्प)
8851402815 (जिओ)

–डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल, मथुरा

Tips to Improve CIBIL Score:

Introduction:
When we give a loan to our friend, we first examine his/her creditworthiness so that we can ascertain whether the amount which we are giving as a loan will be repaid by him/her in the pre-defined time period or not. Similarly the banks examines the credit worthiness of a person based on his/her credit rating.If an individual has a high credit rating, he/she can easily apply for a loan and get it approved by the bank.

The factors which determines the credit worthiness of an individual are:
1. History of Payments
2. Length of Credit History
3. Types of credits taken
4. Amount that is owed

On the basis of all above factors, a credit score is assigned to each individual with a range between 300 to 900 points. An individual having a credit score of 750+ is said to be high credit worth individual. An individual applying for home loan must have a minimum credit score of 650.

4 major credit information companies in India are:
1. Experian
2. TransUnion CIBIL
3. Highmark
4. Equifax

Till now you must have realised that building up your credit score is very important. So here are a few quick tips which will help you boost your credit score:

1. Pay your credit card dues before time: Suppose your billing cycle is due on 15th of the month, try to repay it by 10th. This is a postive indication and will help you improve your CIBIL score. You can

Suppose your billing cycle is due on 15th of the month, try to repay it by 10th. This is a postive indication and will help you improve your CIBIL score. You can set reminders so that you do not skip your due date

2. Do not exhaust the entire credit limit of your credit card: Suppose your credit card limit is 1 lakh rupees and you exhaust 90-95% of your credit limit on regular basis this will indicate that you are a risky borrower and your credit score will fall. Try to use a maximum of 50% of your available credit limit.

3. Keep your credit duration long: If your credit duration is long but you are regularly paying your dues on time, this will give a big boost to your credit score.

4. Repaying your existing debt: Before applying for a new loan you must make sure that all your previous debt has been repaid. This will not only help you avoid debt trap but will also help you improve your credit score.

We hope this reading will help you learn some quick tips which will help you improve your credit score look forward to your feedback on

naad.anusandhan@gmail.com
Pawas Aggarwal
91 87558 26311

Mrigaashree
MRIGAASHREE CAPITAL PVT. LTD.
Mutual Funds | Insurance | PMS | Equity | Commodities | Currency | Bonds | IPOs | Fixed Deposits

आज बॉलीवुड का जाना–पहचाना नाम हैं कॉल गर्ल रही शगुफ्ता रफीक

– डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल, मथुरा

नीयत अगर साफ हो तो नियति को भी रास्ते बदलने को मजबूर किया जा सकता है। कभी–कभी किसी इंसान का प्रारब्ध उसे उस मुकाम तक ले जाता है, जहाँ इसकी परछाईं भी नहीं पहुँचनी चाहिए किन्तु काल–चक्र के व्यूह में फँसकर वो वहाँ तक पहुँच जाता है और तिल–तिलकर जलते हुए अपनी आत्मा पर होने वाले हर कुठाराघात को सहने को मजबूर हो जाता है। ऐसे इन अभागों में हर आयु–वर्ग के बालक–बालिकाओं, युवक–युवतियों और प्रौढ़ स्त्री–पुरुषों की संख्या पर्याप्त रूप से देखी जा सकती है। पर जब अबोध उम्र की किसी बच्ची को ऐसी नारकीय स्थिति से गुजरना पड़ जाए तो निश्चय ही यह सभ्य समाज के गाल पर बहुत बड़ा तमाचा होता है।गुजरांवालां में पैदा हुई किन्तु असल माँ के स्थान पर अनवरी बेगम द्वारा पालित–पोषित बॉलीवुड में देदीप्यमान नक्षत्र के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुकी शगुफ्ता रफीक के कमसिन आयु में ही कठोर संघर्ष की कहानी भी कुछ–कुछ ऐसी ही है। शगुफ्ता अपनी माँ की अवैध सन्तान है। उसके पिता से माँ का सम्बन्ध–विच्छेद हो जाने के कारण बचपन में ही शगुफ्ता अनाथ जैसी हो गई। उसके जीवन में मानों भूचाल आ गया।शगुफ्ता सम्भवतया मशहूर अभिनेत्री सईदा खान की पुत्री हैं जिन्हें वह अपनी बहन बताती हैं, ऐसा फिल्म इंडस्ट्री की तमाम हस्तियों का मानना है। शगुफ्ता खुद भी इतना तो स्वीकारती ही हैं कि वे उनसे बेइन्तहा प्यार करती थीं और जब कभी अनवरी बेगम शगुफ्ता को डांट–फटकार देतीं तो कभी –कभी तो अनवरी बेगम से इस बात के लिए वो लड़ भी जाती थीं। यही नहीं, शगुफ्ता की आवाज भी सईदा खान से बिल्कुल मिलती–जुलती है। शगुफ्ता के जीवन–संघर्ष के बारे में जानकर किसी भी सहृदय का भावुक हो जाना स्वाभाविक है। इस शख्सियत के हौसलों की उड़ान देखकर हर कोई नाज कर उठेगा।शगुफ्ता रफीक को होश सम्हालते के साथ ही जिस्मफरोशी जैसे अनैतिक कृत्यों से दो –चार होना पड़ा। खेलने–खाने की उम्र में ही उसे जलालत से भरे इस धन्धे की ओर रुख करना पड़ गया। पहले वह बार सिंगर और बार डांसर बनी और फिर सत्रह बरस जैसी कमसिन उम्र में ही उसने जिस्मफरोशी के धन्धे के लिए अंधेरी गलियों की ओर रुख कर लिया। लगभग 10–11 वर्षों तक जिस्मफरोशी का धन्धा करते रहते भी उसके जंजाल से निकलने की पीड़ा को घुट–घुटकर बर्दाश्त करती रही शगुफ्ता को इस नारकीय जीवन से निकाल देने वाले किसी तारनहार की तलाश भी अपने ग्राहकों में बराबर बनी रही। उसकी जिन्दगी में दो लोग ऐसे आए जिन्होंने उस पर अपने रहम –ओ–करम की ऐसी बरसात की कि उसका जीवन ही बदल गया। पहला शख्स मुम्बई में ही मिला, जो उसका ऐसा ग्राहक था कि उसने उससे कह दिया कि तुम जो कुछ भी कर रही हो, उसे बन्द कर दो। वो उसे इतना पैसा देने लग गया कि उससे न सिर्फ भरण –पोषण की पूर्ति हो जाती थी बल्कि शेष पैसे से वह अपना जीवन सँवारने के लिए संघर्ष भी करने लग गई। दूसरा व्यक्ति शगुफ्ता को 27 की उम्र में दुबई में मिला जबकि वह पहली बार एक भारतीय बैंड के साथ कार्यक्रम करने वहाँ गई थी। यह एक पाकिस्तानी व्यक्ति था जो शगुफ्ता से लगभग 20 साल बड़ा था और उसे दिल दे बैठा था। उसने शगुफ्ता पर इतनी दौलत लुटानी शुरू कर दी कि उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। फिर एक दिन उसने उसे अपना बनाने का प्रस्ताव भी रख दिया। शगुफ्ता भी उसे मना न कर सकी। अब उससे उसके बेहद अंतरंग सम्बन्ध बन चुके थे। फिर एक दिन शगुफ्ता से उसके अंतरंग मित्र ने पूछ ही लिया कि– आखिर तुम करना और बनना क्या चाहती हो ? शगुफ्ता भी अब तक अपने अन्तस् में समेटे दर्द को अपनी जुबाँ तक ले ही आई और उसने कह दिया कि– मैं फिल्मों के लिए पटकथा और संवाद लिखना चाहती हूँ। यह बात अलग है कि माँ अनवरी बेगम को कैंसर हो जाने के कारण शगुफ्ता को दुबई से वापिस आना पड़ गया। इसी बीमारी के चलते अनवरी बेगम की मौत हुई थी। अनवरी बेगम ने अपने लाड़–प्यार में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी। वह शगुफ्ता को बचपन में ही चाइल्ड आर्टिस्ट के रूप में फिल्मों में लाना चाहती थीं और बाद में एक अदाकारा भी बनाना चाहती थीं किन्तु शगुफ्ता की रुचि बचपन से ही केवल फिल्म और सम्वाद लेखन की ओर ही रही।बदनसीबी से वेश्या बनी वही शगुफ्ता रफीक अब बॉलीवुड का जाना–पहचाना नाम है। शगुफ्ता की इस कहानी को जानकर एक यह प्रश्न सबके जेहन में उठना स्वाभाविक है कि जो बाला बचपन से ही कोठे जैसे माहौल में रही, आखिर उसने अपनी पढ़ाई –लिखाई कब की होगी ? सचमुच शगुफ्ता ने स्कूली पढ़ाई–लिखाई के नाम पर कुछ अर्जित नहीं किया। उसने मर–मरकर सातवीं जमात तक की ही शिक्षा प्राप्त कीय वह भी अन्तिम जमात में लगातार दो–तीन वर्षों तक फेल होकर। पढ़ाई से जी चुराने वाली शगुफ्ता को स्कूल और पढ़ाई के तो नाम से भी घिन आती थी। जब अनवरी बेगम ने शगुफ्ता पर पढ़ने के लिए अधिक दबाव बनाया तो उसने आत्महत्या तक कर लेने की धमकी दे डाली। हाँ, मनगढ़ंत बहाने बनाने और झूठ बोलने में शगुफ्ता बचपन से ही माहिर थी। कोई भी गलती हो जाती तो ऐसे–ऐसे बहाने बनाकर अपना पक्ष रखती थी कि हर कोई उस पर भरोसा कर लेता था। एक बार तो उसकी माँ की एक सबसे गहरी मित्र ने भी यहाँ तक कह दिया था कि यह बहानेबाज एक दिन अच्छी कहानीकार बन सकती है। और हुआ भी आखिर वही।

समृद्ध भारत वसुंधरा

(पृष्ठ–7 का शेष भाग)

शगुफ्ता को बहाने भी इसलिए बनाने पड़ते थे कि उसकी माँ उसे गलतियों पर डांटे नहीं।12–13 तक कि उम्र तक तो शगुफ्ता को यह भी मालूम न था कि उसकी माँ, भाई–भाभी आदि सब उसके असल खूनी रिश्ते के नहीं हैं। एक बार जब उसकी भाभी ने अपने बच्चों को डाँटने पर शगुफ्ता को यह कह दिया कि तुम इनको डाँटने वाली हो कौन ? तुम इस घर की भी नहीं हो। यही नहीं, जब उसके भाई ने भी घर आने के बाद उसे बहुत बुरा–भला कहा और असलियत बता दी तो शगुफ्ता ऐसी टूटी कि सारे सपने बिखर गए। शगुफ्ता का पालन करने वाली माँ अनवरी बाई एक समय बेहद साधन–सम्पन्न रहीं। हीरे–जवाहरात, सोना –चांदी और धन–दौलत किसी भी चीज की कमी नहीं थी किन्तु जल्दी ही उनकी आर्थिक स्थिति इतनी बिगड़ गई कि उन्हें न केवल अपनी चूड़ियाँ तक बेचनी पड़ीं बल्कि लोगों से माँग–माँगकर पेट की आग बुझाने को मजबूर होना पड़ गया। अनवरी बाई के अहसान तले दबी शगुफ्ता अपनी माँ की आर्थिक विपन्नता और कर्ज ली गई रकम को वापिस माँगने वालों के ताने सुन–सुनकर बेहद दुखी रहने लगी और उसने माँ से छिप–छिपकर वह सब करना शुरू कर दिया जो कोई भी लड़की पसन्द नहीं करेगी। माँ को भी शगुफ्ता की ये सब हरकतें पसन्द न थीं किन्तु वह चाहकर भी उसे रोक नहीं पाती थीं। आखिर शगुफ्ता यह सब करके उनके एहसानों को ही जो चुकता कर रही थी। शगुफ्ता के मन को जहाँ अनिच्छापूर्वक किए जाने वाले इस काम से ग्लानि होती थी वहीं उसको जीवन –दान देने वाली अपनी माँ के बुरे वक्त में सहारा दे पाने की खुशी भी होती थी। लगभग 2005 में मुम्बई में डांस बार पर लगी रोक से कुछ पहले ही शगुफ्ता की किस्मत ने उसे इस नारकीय जीवन से हटाकर वहाँ पहुँचाने का निश्चय कर लिया जहाँ वाकई उसकी जरूरत थी। शगुफ्ता की मुलाकात महेश भट्ट से होते ही उसकी दुनिया ही बदल गई। जीवन में एक जैसे हालातों का सामना कर चुके इन दोनों दिग्गजों का मिलन बॉलीवुड को ऐसा रास आया कि शगुफ्ता द्वारा लिखी गई दर्जनभर फिल्मों की पटकथा और सम्वाद दर्शकों के दिला –दिमाग पर छाने लग गए। शगुफ्ता की पहली फिल्म लम्हे थी जिसे साइन करने के दो दिन पूर्व तक वह बार में डांस कर रही थी। कारण कि जब उसको सुप्रसिद्ध फिल्म लेखक और निर्देशक महेश भट्ट ने अपने कैम्प में काम करने के लिए आमन्त्रित किया तो उसे सहज ही विश्वास नहीं हुआ क्योंकि वह कई बार धोखा खा चुकी थी और किसी भी कीमत पर बार से होने वाले धन्धे को नहीं छोड़ना चाहती थी। आशिकी–2 जैसी सुपरहिट फिल्म के स्क्रीन प्ले और डायलॉग्स लिखने वाली शगुफ्ता रफीक के सम्वाद कारण महेश भट्ट से काम के बदले कोई सौदेबाजी नहीं करतीं क्योंकि वे उन्हें अपना ही मानती हैं।अब तक शगुफ्ता जिन फिल्मों के लिए पटकथा या सम्वाद लिख चुकी हैं , उनमें आवारापन, जिस्म 2, राज 2, मर्डर 2, आशिकी 2 जैसी फिल्में प्रमुख हैं। अधिकांश फिल्मों के नामों की पुनरावृत्ति के पीछे भी कारण है। शगुफ्ता की जो–जो फिल्में सुपरहिट गईं, उन्हीं के टाइटल्स को बार–बार दुहराने के कारण उन्हें सीक्वल क्वीन भी कहा जाता है।अब शगुफ्ता फिल्म निर्देशन में भी भाग्य आजमा रही हैं।

– डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल, मथुरा

आई होली, आई होली। रंग–बिरंगी आई होली।

मुन्नी आओ, चुन्नी आओ,
रंग भरी पिचकारी लाओ,
मिल–जुल कर खेलेंगे होली।
रंग–बिरंगी आई होली।।

मठरी खाओ, गुँझिया खाओ,
पीला–लाल गुलाल उडघाओ,
मस्ती लेकर आई होली।
रंग–बिरंगी आई होली।।

रंगों की बौछार कहीं है,
ठण्डे जल की धार कहीं है,
भीग रही टोली की टोली।
रंग–बिरंगी आई होली।।

परसों विद्यालय जाना है,
होम–वर्क भी जँचवाना है,
मेहनत से पढघ्ना हमजोली।
रंग–बिरंगी आई होली।।

–रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'

भंगड़ियों से निवेदन––

उतनी ही भंग पीजिए, न हो रंग में भंग।
भूले से भी हो नहीं, इसके कारण जंग।।
इसके कारण जंग, जोश में होश न खोवे।
भोले का यह भोग, भंग बदनाम न होवे।।
कहें श्रजकश कविराय,रखे जो क्षमता जितनी।
नैंकु न दीजे अधिक, दीजिए ताकों उतनी।।
बच्चों को नेक सलाह––––
ना–ना–ना–ना जो करे, सुनो न उसकी एक।
डोरबेल पे चीपिए, टेप का टुकड़ा एक।।
टेप का टुकड़ा एक, तुरत दौड़ा आवेगा।
पोत लीजिए जी–भर,कुछ नहिं कर पावेगा।।
कहें रजक कविराय, बुनो अस ताना–बाना।
हँस–हँस ले पुतवाइ, करे जो ना–ना–ना–ना।।
होली ! तब और अब––––
तब जंगल में डोलते, ग्वालिन – ग्वाला संग।
हँसी–ठिठोली सहित ही,करते सब हुड़दंग।।
करते सब हुड़दंग, नाचते – गाते हिल–मिल।
जब–तब होती नोंक–झोंक,फिर जाते दिल मिल।।
कहें रजक वो प्रेम–देवता कहाँ सो गया।
तन – मन दूषित देख हमारे, हवा हो गया।।
होली की महनीयता ––––
मनमुटाव, मतभेद अरु, मनभेदन की मार।
होरी में मिट जात है,जाग जात पुनि प्यार।।
जाग जात पुनि प्यार,यही होली सिखलाती।
ऊँच – नीच अरु जाति – धर्म के भेद मिटाती।।
कहें रजक जीवन में,रँग भर देती होली।
भाव प्रेम का जगा,घृणा हर लेती होली।।

होली की हार्दिक शुभकामनाएं